दिसम्बर-२०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

"ऐसा मेरे साथ ही क्यों?"

संपादकीय

बालमित्रों,

कई बार हमारे साथ ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं, जो हमें बिल्कुल भी स्वीकार नहीं होतीं। जैसे कि, सभी शरारत कर रहे हों, फिर भी टीचर ने मुझे ही क्यों डाँटा? हर बार परीक्षा के समय ही मैं क्यों बीमार हो जाता हूँ? मम्मी-पापा, छोटे भाई का ही ध्यान क्यों रखते हैं? हर बार मैं ज्यादा मेहनत करता हूँ, फिर भी मेरे मार्क्स कम क्यों आते हैं? आदि। अंततः हम इस प्रश्न में अटक जाते हैं कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है? जिसका हमारे पास कोई संतोषपूर्ण जवाब नहीं होता।

लोग हमें ऐसा सिखाते हैं कि, सचमुच इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी, सामनेवाले की गलती की वजह से तुम्हें बेकार ही भुगतना पड़ा। इस तरह हम बार-बार सामनेवाले के दोष देखने लगते हैं।

लेकिन, जब हमें कुछ भी दुःख होता है उसमें वास्तव में किसकी गलती है, इस रहस्य को परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में खुला किया है। तो आओ, इसे समझें और किसी भी परिस्थिति में समाधानपूर्वक जीवन जीएँ।

- डिम्पल मेहता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ३ अंक : ९
अखंड क्रमांक : ३३
दिसम्बर-२०१५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

कुछ भी गलती किए बिना हमें भुगतना आए, तब ऐसा लगता है कि, इसमें मेरी क्या गलती है? इसमें मैंने क्या गलत किया? ऐसा मेरे साथ ही क्यों हुआ?

एक पल के लिए भी जगत् कायदे के बिना नहीं होता। जिसे इनाम देना होता है, उसे इनाम देता है। दंड देना होता है, उसे दंड देता है। इस तरह जगत् संपूर्ण न्यायपूर्वक ही है। हमारी दृष्टि में नहीं आने की वजह से न्याय नहीं दिखता। जब तक स्वार्थ दृष्टि होती है, तब तक न्याय कैसे दिखेगा?

प्रश्नकर्ता : कोई हमसे कुछ कह दे, हमारी गलती नहीं हो फिर भी बोले तो?

दादाश्री : हमारी गलती नहीं हो फिर भी बोले, तो ऐसा बोलने का अधिकार किसी को भी नहीं है। जगत् में भी आपकी कोई गलती न हो तो आपको कोई इंसान दुःख दे ऐसा अधिकार किसी को भी नहीं है। यदि कोई बोलता है, तो तुम्हारी कोई भूल है। उस भूल का बदला वह इंसान तुम्हें दे रहा है। इसलिए उसके लिए भाव नहीं बिगाड़ने चाहिए। और हमें क्या कहना चाहिए कि, हे प्रभु उसे सद्बुद्धि देना।

प्रश्नकर्ता : हम किसी के साथ बिल्कुल सीधे चलते हों फिर भी वो हमें लकड़ी से मारे, तो हमें ऐसा समझना चाहिए कि, हमारी ही भूल का परिणाम है?

दादाश्री : बिल्कुल। लकड़ी से मारा वही न्याय! बाकी इस दुनिया में कोई कुछ कर सके ऐसा है ही नहीं। जो गलतियाँ हो गई हैं, वे छोड़ेंगी नहीं। इस जगत् में कोई जीव किसी अन्य जीव को तकलीफ दे नहीं सकता, ऐसा स्वतंत्र जगत् है। यदि कोई तकलीफ देता है, तो पहले कुछ दखल ज़रूर की होगी, इसलिए अपने हिसाब के बिना एक मच्छर भी हमें काट नहीं सकता। हिसाब है इसीलिए दंड आया है।

प्रश्नकर्ता : दुःख देनेवाले को भुगतना तो पड़ेगा ही न?

दादाश्री : फिर, जब वो भुगतेगा उस दिन उसकी गलती मानी जाएगी। लेकिन आज तुम्हारी गलती पकड़ी गई।

प्रश्नकर्ता : भुगतना नहीं पड़े, उसका क्या उपाय है?

दादाश्री : किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं दें, आए हुए दुःख में किसी को दोषित देखे बिना, समता में रहकर पूरा करें तो हमारा बहीखाता चोखा हो जाएगा। तुमने जितना-जितना, जिसे-जिसे दिया होगा, उतना-उतना वे तुम्हें वापस देंगे, तब तुम खुश होकर जमा कर लेना, कि आहा! अब हिसाब पूरा हुआ, नहीं तो गलती करोगे तो वापस भुगतना ही पड़ेगा।

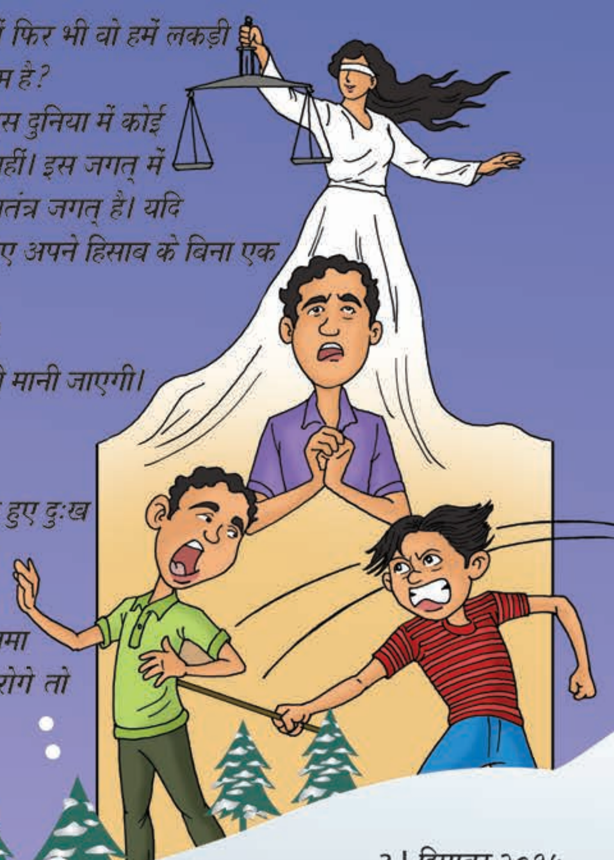

जो दुःख भुगतता है उसकी गलती
और यदि सुख भुगतता है तो वह
उसका इनाम।

यह तो नई ही बात!

कुदरत का न्याय कैसा है? यदि तुम अच्छे इंसान हो और आज यदि तुम चोरी करने जाओ, तो तुम्हें पहले ही पकड़वा देगी और यदि बुरे इंसान हो, तो पहले ही दिन तुम्हें एन्करिज करेगी। कुदरत का ऐसा हिसाब होता है कि चोखा रखना है इसलिए उसे पकड़वा देगी, हेल्प नहीं करेगी और उसे (बुरे इंसान को) हेल्प ही करती रहेगी और फिर जो मार पड़ेगी, उससे फिर वह ऊँचा नहीं उठ पाएगा। वह भारी अधोगति में जाएगा, लेकिन कुदरत एक मिनट के लिए भी अन्यायी नहीं हुई।

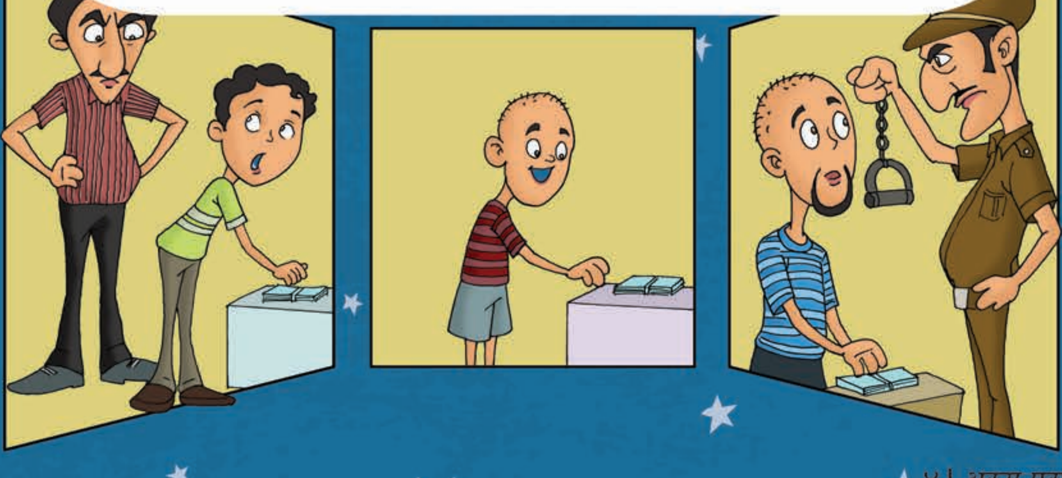

कोई तुम्हें दुःख देता हो तो उसकी गलती नहीं है, लेकिन यदि तुम दुःख भुगतते हो तो तुम्हारी गलती है। यह कुदरत का कायदा है।

इस दुनिया में ऐसा कोई पैदा ही नहीं हुआ, जो किसी का कुछ कर सके। इतना नियमवाला जगत् है। पूरा चौगान साँपों से भरा हो, लेकिन एक भी साँप छुए नहीं, ऐसा नियमवाला जगत् है।

सामनेवाला दुःख भुगतता हो, तब हमें यह नहीं देखना है कि, उसकी गलती है। तब हमें "मुझे मदद करनी चाहिए। मैं कैसे उसकी मदद करूँ?" इस तरह देखना है।

सुख-दुःख का रहस्य

भगवान महावीर सभा में विराजमान थे। सभा में सभी एक चित्त होकर भगवान की वाणी सुन रहे थे। भगवान की वाणी का नाद दूर तक फैल रहा था। ऐसे में सभा के एक कोने में कुछ कोलाहल सुनाई दिया। प्रभु के नेत्र उस दिशा में स्थिर हो गए। सभी का ध्यान उस तरफ गया।

देखा तो एक वृद्ध पुरुष शोर मचा रहा था। उसका पूरा शरीर रोग-ग्रस्त था। असहनीय पीड़ा की वजह से वह चिल्ला रहा था। उसे देखकर उबकाई आए, ऐसा था। उस वृद्ध के साथ चार व्यक्ति भी थे। उनके शरीर तो मनुष्य के थे, लेकिन देखने में बिल्कुल पिशाच जैसे लग रहे थे। उनमें तीन पुरुष थे और एक स्त्री थी। वो इतने कुरूप थे, कि एक को देखें तो दूसरे को भूल जाएँ।

सभा तो इन पाँचों को देखते ही रह गई। रोगी वृद्ध, प्रभु के सन्मुख आकर बोला, "दीनानाथ! ये मेरा कैसा अवतार है। जन्म से लेकर अब तक सुख का एक छींटा भी नहीं मिला। मेरे अपने बेटा-बेटी सभी मेरे दुश्मन बन गए हैं। प्रभु! मुझ निर्-अपराधी का कोई दोष-गुनाह?"

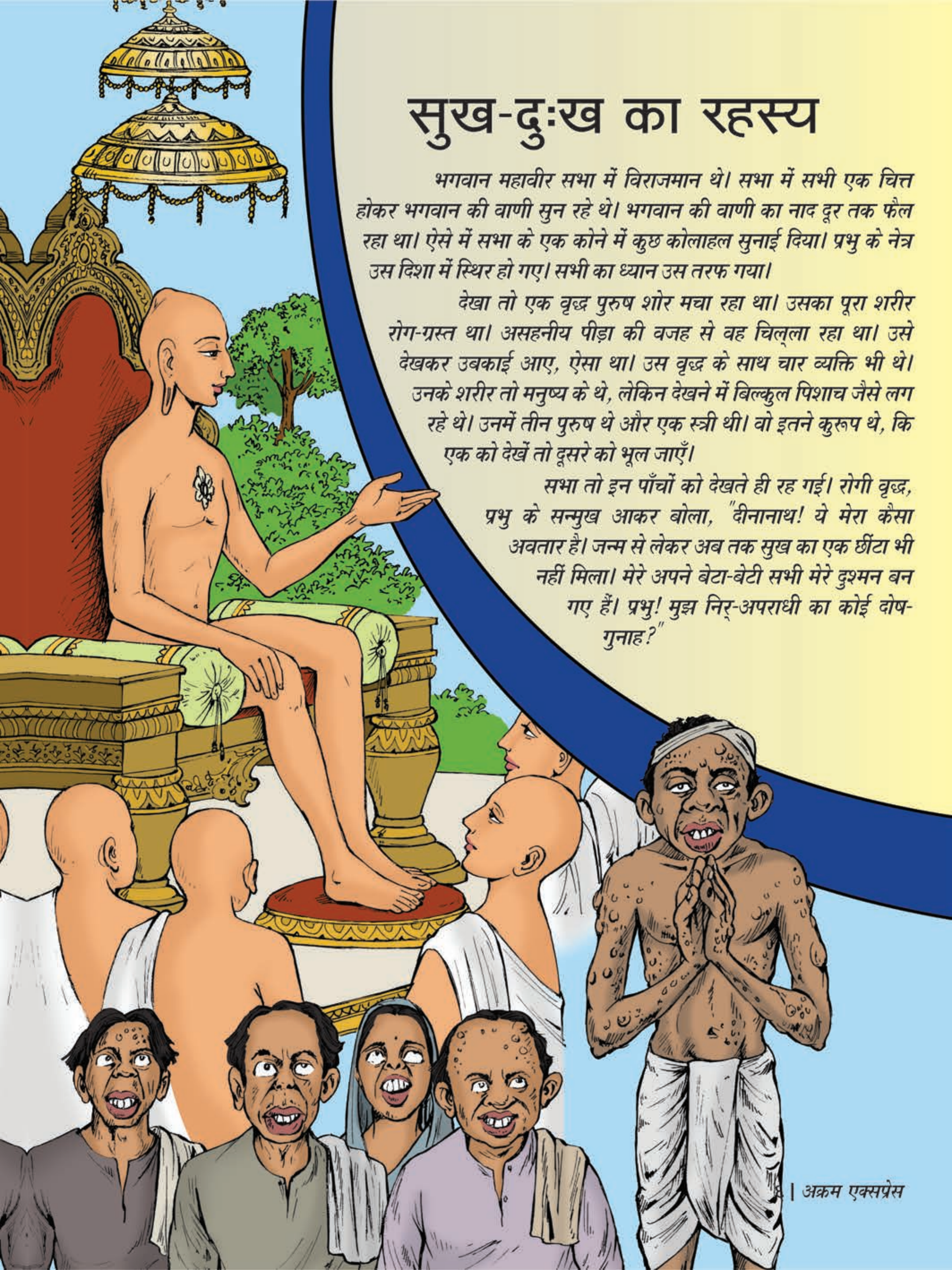

भगवान ने बहुत ही प्रेमपूर्वक कहा, "वत्स, यदि हमने कुकर्म किया हो, तभी उसके कड़वे फल भुगतने पड़ते हैं। अपने दुःख का कारण हम स्वयं ही हैं। बेटा-बेटी और दुनिया तो मात्र निमित्त ही है।"

वृद्ध शांत होकर सुन रहा था। सभा भी एकाग्र चित्त हो गई।

वृद्ध को समाधान नहीं मिलने पर उसने पूछा, "कुकर्म? मैं नहीं जानता कि ऐसा कोई कुकर्म मैंने किया हो।"

प्रभु ने कहा, "अभी तुम जो फल भुगत रहे हो, वह तुम्हारे पिछले जन्म के किए कुकर्मों का फल है जिनकी वजह से तुम्हें इस जन्म में बिल्कुल भी सुख नहीं मिला।"

वृद्ध ने आगे पूछा, "हे प्रभु! क्या मेरे ये पुत्र-पुत्री भी पिछले जन्म में किए गए कुकर्मों के सहभागी थे?"

प्रभु बोले, "हाँ, वत्स। उसके बिना तो उन्हें भी दुःख आते ही नहीं न!"

यह सुनकर वृद्ध के सभी पुत्र-पुत्री भगवान के समक्ष आए। दोनों हाथ जोड़कर बहुत ही विनयपूर्वक बड़े बेटे ने भगवान से पूछा, "हे प्रभु! कृपा करके हमें हमारा गुनाह बताइए, जिससे हमारे मन को समाधान हो क्योंकि इस जन्म में तो हमने कुछ गलत किया ही नहीं।"

दूसरे बेटे ने भी नज़दीक आकर भगवान से कहा, "हाँ प्रभु, हमारे कौन से कर्मों का हमें ऐसा खराब फल भुगतना पड़ रहा है। यह हमें विस्तार से बताने की कृपा कीजिए।"

प्रभु ने कहा, "तो सुनो फिर अपने दुःख के कारण का निर्णय तुम स्वयं ही करना!"

प्रभु ने कहना शुरू किया...

"युगों-युगों पहले की बात है। कुआपुर नामक नगर था। उसमें दुर्ग नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह पढ़ा-लिखा और होशियार था लेकिन उसे विद्या से ज्यादा धन के प्रति लगाव था। धर्म का भी अपनी सुविधा के लिए उपयोग करता। जहाँ धन मिलता हो, वहाँ वह विवेक भूल जाता।

दुर्ग ब्राह्मण के चार बेटे थे। उन चारों को उसने कला और विद्या में निपुण बनाया। लेकिन काम करने में वे बहुत आलसी थे। पूरा दिन खा-पीकर घूमते रहते और खर्च करते रहते। पूरे परिवार का भार अकेले ब्राह्मण को ही उठाना पड़ता! एक कमाए और सभी खाएँ, ऐसा घर कितने दिन चले? धीरे-धीरे घर में दरिद्रता आने लगी। बहुत ही चिंता के दिन आ गए। भूख से मरने की बारी आ गई!

ब्राह्मण ने चारों बेटों को बुलाकर कहा, "अब तो भूख से मरने के दिन आ गए हैं। अभी तक तो तुमने बहुत मज़े किए , लेकिन अब कुछ तो समझो और कुछ भी करके धन कमाकर लाओ।"

बेटों ने पिता से कहा, "पिता जी, लक्ष्मी तो कला की दासी है और हमें हमारी कला पर पूरा विश्वास है। ये दुःख के दिन बस बीत गए समझो!"

प्रभु ने कहा, "अभी तुम जो फल भुगत रहे हो, वह तुम्हारे पिछले जन्म के किए कुकर्मों का फल है जिनकी वजह से तुम्हें इस जन्म में बिल्कुल भी सुख नहीं मिला।"

बाकी सभी बेटों ने भी बड़े बेटे की "हाँ" में "हाँ" मिलाई। ब्राह्मण बेटों की बात सुनकर खुश हो गया। वह बोला, "बहुत अच्छा! तो जाओ और धन कमाकर लाओ। मेरा आशीर्वाद तुम सब के साथ ही है।"

और सभी बेटे अलग-अलग रास्तों पर धन कमाने के लिए निकल पड़े।

बड़ा बेटा पास के ही गाँव में गया। उसके पिता के चाचा जी, उस गाँव में रहते थे। वह वृद्ध थे और कड़क स्वभाव के थे लेकिन भतीजे का बेटा बहुत समय के बाद आया था, इसलिए वृद्ध ने पौत्र का स्वागत करके प्रेम से खाना खिलाया।

उसने कहा, "दादा, मेरे पिता जी ने अपना हिस्सा माँगने के लिए यहाँ भेजा है। हमारा जो हिस्सा हो वह तुरंत दे दीजिए।"

यह बात सुनकर दादा क्रोध से तमतमा उठे और बहुत ही कठोर शब्द बोलने लगे, "अरे नालायक! तेरा पिता धर्म विद्या के बदले ठग विद्या सीखा है। मैं एक पाई भी देनेवाला नहीं!"

वह लड़का भी आग के सामने आग जैसा हो गया। उसकी आँखें क्रोध से लाल हो गईं और उसने भी अपशब्द बोल दिए। फिर तो बात मारा-मारी तक आ गई। इसमें वृद्ध के हाथ से लड़के को कुछ चोट लग गई। वह तो गाली देने लगा और शोर मचाने लगा, "अब मैं राजा से शिकायत करूँगा। ब्राह्मण के बेटे को मारा!"

यह सुनकर वृद्ध को डर लगा कि अब क्या होगा? राजा दंड देगा तो? वृद्ध ने मुश्किल से लड़के को रोका। समझा-बुझाकर शांत करके, पाँच-सौ रुपए देकर विदा किया।

घर पहुँचकर बेटे ने पिता को अपने पराक्रम का वर्णन किया। धन के लोभी पिता को तो पाँच सौ रुपए शक्कर जैसे लगे। बेटे की गलती देखना तो दूर, उसने तो ऊपर से उसे शाबाशी दी! बेटा क्रोध करके, लड़ाई-झगड़ा करके, लोगों से पैसे छीनने में माहिर हो गया।

ब्राह्मण का दूसरा लड़का कुशस्थल नामक गाँव पहुँचा। उस गाँव में भुइल नामक एक योगी ने ढोंग फैलाया हुआ था। सिद्धियों की बड़ी-बड़ी बातें करके वह लोगों से पैसे हथिया लेता था। ब्राह्मण का लड़का भी आडंबर और मिथ्याभिमान करने में बिल्कुल भी कम हो ऐसा नहीं था। उसने भी एक बड़े योगी का भेष बनाया और उस योगी के पास पहुँच गया।

भुइल को लगा, "ये तो सेर के ऊपर सवा सेर मिल गया। अब मेरी दुकान नहीं चलनेवाली।"

उसने नए योगी के साथ झट से संधि कर ली, "अरे भाई, हम तो आपस में भाई-भाई कहलाते हैं, जो मिलेगा उसे आधा-आधा बाँट लेंगे।"

ब्राह्मण के बेटे को तो यही चाहिए था। बेटे का पिता तो पैसे की थैलियाँ देखकर जैसे पागल ही हो गया और उसने आडंबर करके पैसे कमाने के लिए अपने बेटे को बहुत प्रोत्साहन दिया।

तीसरे बेटे ने लोगों को ठगकर कमाई करने का मार्ग खोज लिया। उसने एक बड़े ठग का भेष बनाया। लोभी लोगों को अपने माया-जाल में फँसाकर उनकी संपत्ति लूटने लगा। पिता ने अपने बेटे को ठगने की कला के लिए बहुत शाबाशी दी।

चौथा बेटा धन की खोज में दरिया के पार पहुँच गया। वहाँ उसे एक बाबा जी मिले। बाबा जी का भेष तो साधु का था, लेकिन उनकी थैली हीरा-माणिक-मोतियों से भरी हुई थी। ब्राह्मण के लोभी बेटे को तो जैसे पसंद का भोजन मिल गया हो, ऐसा लगा। वह बाबा जी का चेला बन गया। वह गुरु की खूब सेवा-चाकरी करता। गुरु भी उससे बहुत प्रसन्न थे। गुरु तो जैसे चेले की भक्ति के दास बन गए लेकिन चेले का ध्यान हमेशा गुरु के धन पर ही रहता और एक रात मौका पाकर, चेला गुरु का सारा धन लूटकर छू मंतर हो गया। ब्राह्मण पिता ने भगवान का उपकार माना कि, "भगवान, बेटा

हो तो ऐसा हो!"

यह कथन सुनाकर भगवान महावीर ने उस रोगिष्ट वृद्ध से कहा, "वह दुर्ग ब्राह्मण के रुप में तुम्हारा ही जन्म था।"

उस जन्म में क्रोध और झगड़ा करके धन कमानेवाला तुम्हारा बेटा चंड है।

मान और मिथ्याभिमान से धन इकट्ठा करनेवाला तुम्हारा दूसरा बेटा प्रचंड है।

धोखा देकर धन इकट्ठा करनेवाला तुम्हारा तीसरा बेटा वह तुम्हारी यह पुत्री चंडली और धन के लोभ से गुरु को धोखा देनेवाला तुम्हारा यह चौथा बेटा, वोम!

इन चारों बेटों ने गलत तरीके से धन को इकट्ठा किया और उस धन को लेकर तुम खुश हुए। तुम्हारा वह पाप इस जन्म में पका और तुम दुःखी हो गए और तुम्हारे बच्चों को भी अपने खुद के पाप कर्मों की वजह से सुख का एक अंश भी नहीं मिला। "जो जीव किसी भी तरह से दूसरों को दुःख देंगे, वे तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों की तरह जीवनभर दुःखी होंगे। जो दूसरों को सुख देगा, उसे दुनिया की कोई शक्ति दुःखी कर ही नहीं सकती। अपने दुःख का कारण जीव खुद ही है।"

भगवान की वाणी से वृद्ध को अपने दुःख का समाधान मिला। उसे और उसके पुत्रों को उनके उस प्रश्न का जवाब मिल गया कि, "ऐसा मेरे साथ ही क्यों?"

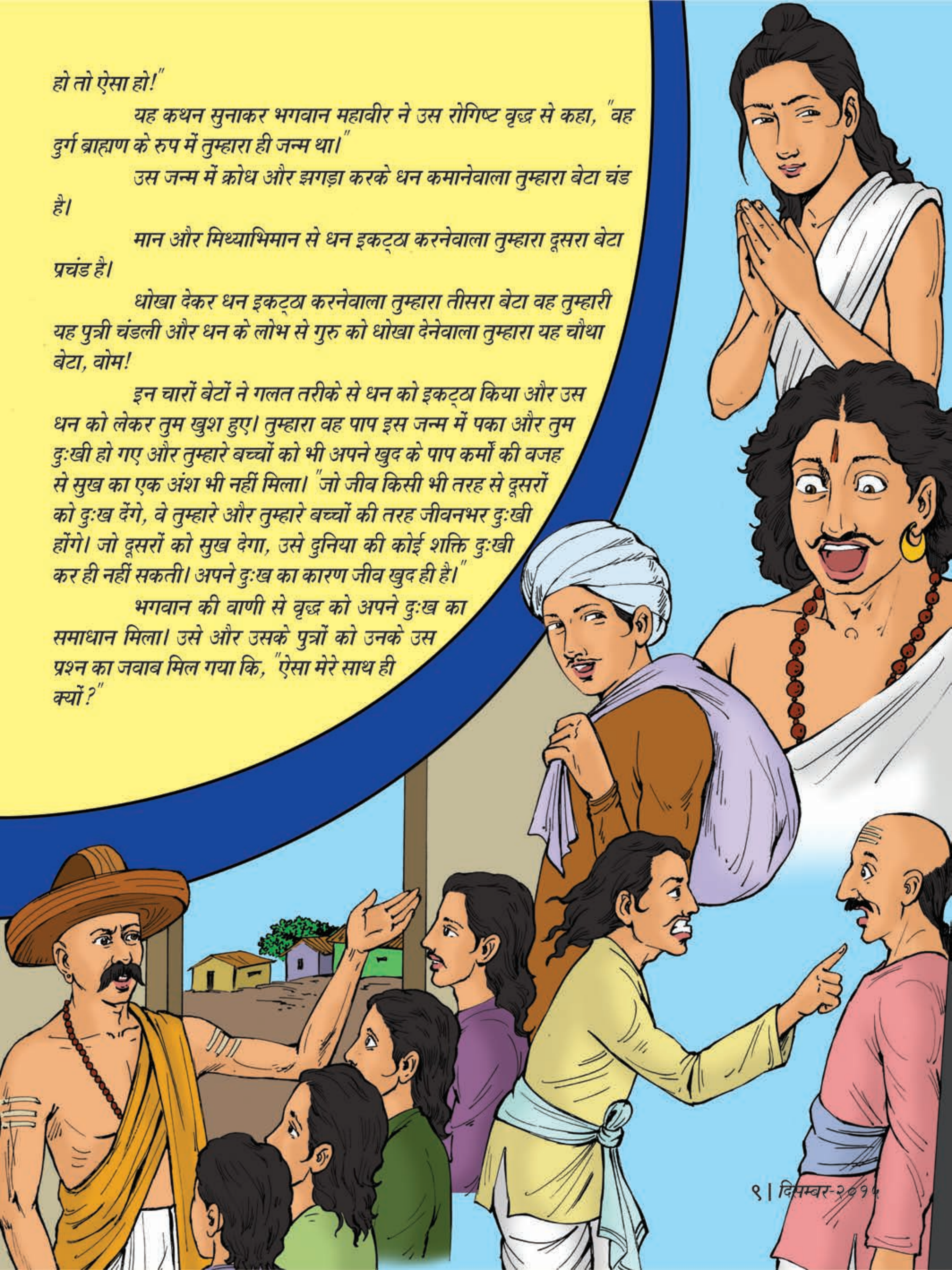

केन्या-दुबई टूर के दौरान बच्चों के साथ पूज्य श्री

मेसन्जर

ओह नो! ड्राइवर की तो ऐसी की तैसी! हे भगवान, मैं स्कूल समय पर पहुँच जाऊँ।
हे दुर्भाग्य... अब मेरा पीछा छोड़! हर बार मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है?
वाचा स्कूल पहुँची तब हिस्टॉरिकल टूर पर जाने के लिए सभी बच्चे स्कूल गेट के पास, स्कूल बस का इंतज़ार कर रहे थे।
थैंक गॉड। स्कूल बस अभी आई नहीं है।
तभी वाचा ने वैशाली को सामने से आते हुए देखा।
हाय वैशाली! ये क्या हो गया तुझे?
अरे कुछ नहीं यार, ये तो खेलते-खेलते चिंटू का धक्का लग गया और पट्टी बंध गई। देख, अपनी बस आ गई।

बस का पहला स्टॉप सोनमहल था। महल में खूब ठंड़क होते हुए भी वाचा अंदर से उबल रही थी।
क्या हुआ तुझे? इतनी अपसेट क्यों है?
बस में वो सीनियर्स मुझे धक्का मारकर आगे जाकर बैठ गए। मुझे बैठने के लिए अच्छी जगह भी नहीं मिली। हर बार मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है?
एक बात समझाऊँ। हमारा परीक्षा का रिज़ल्ट ९० प्रतिशत आए तो हम नहीं समझेंगे कि १० प्रतिशत जितनी हमने गलती की होगी, उसका यह परिणाम है! इसमें हम टीचर पर चिढ़ेंगे कि अपनी गलती समझेंगे?
इसमें हम अपनी गलती समझ सकते हैं, लेकिन वो धक्का मारे यह तो खुली उनकी ही गलती है न?
इसी तरह हमें कुछ भी भुगतना पड़ता है, वह हमारी ही गलती का परिणाम हमें मिलता है।
वैशाली कुछ आगे बोलने जाए तभी गाइड ने सूचना दी।
यह "राजा अभयसिंह" कारागृह है। इस कारागृह की खासियत यह है कि, इस जगह राजा, खराब संदेश लेकर आनेवाले दूत(मेसन्जर) को सजा देकर बंद कर देते।

कितना मूर्ख राजा है! कभी मेसन्जर्स पर भी गुस्सा किया जाता है?
हम्म...मेसन्जर्स पर गुस्सा करके क्या फायदा? तो फिर तू क्यों मेसन्जर्स पर अपसेट होती है?
क्या मेसन्जर्स? किसके मेसन्जर्स?
बस में जो सीनियर्स तुझे धक्का देकर आगे निकल गए, ये सभी कुदरत के मेसन्जर्स थे। तेरी ही किसी गलती का फल देने के लिए आए थे।
यानी क्या?
आज कोई भी व्यक्ति हमारे साथ कुछ भी गलत करता है, उसका मतलब यह है कि हमारी पूर्व की गलती का परिणाम देनेवाला वह मेसन्जर है। अब यदि गलती अपनी हो तो मेसन्जर का गुनाह देखा जाता होगा क्या?
इसका मतलब यह कि, चिंटू ने तुम्हें धक्का देकर गिरा दिया और तुम्हें पट्टी बाँधनी पड़ी, यह तुम्हारी गलती है। चिंटू की नहीं?
एक्ज़ेक्टली! बता, यदि ऐसी समझ हाज़िर रहे तो यह प्रश्न उठे ही नहीं कि ऐसा मेरे साथ ही क्यों?! उल्टा, हमें तो खुश होना चाहिए कि हमारे हिसाब के दंड में से एक दंड कम हुआ।
जैसे हमने आज अपनी गलती का दंड भुगता, वैसे ही सभी को अपनी-अपनी गलती का दंड कभी न कभी तो भुगतना ही पड़ता है।
हम्म... लेकिन चिंटू और इन सीनियर्स की गलती तो थी ही न! उन्हें उनकी गलती का दंड नहीं मिलेगा?

तभी टीचर ने बच्चों को लन्च के लिए बुलाया।
दस ही मिनट में बाहर गार्डन में लन्च शुरू होगा। सभी जल्दी-जल्दी गार्डन में पहुँच जाओ।
लन्च की लाइन में खड़ी हुई वाचा ने अन्य बच्चों की प्लेट में समोसा देखा और उसके मुँह में पानी आ गया। जब उसका नंबर आया तब...
सॉरी बेटा, समोसे खत्म हो गए।
व्हाट??
ऐसा मेरे साथ ही क्यों? इन लोगों को परोसना ही नहीं आता। वो मोटा पिंटू अपनी प्लेट में पाँच समोसे लेकर बैठा है!
लेकिन यह विचार आने के साथ ही, उसी पल उसे कुछ लाईट हुई। कुछ भी बोले बिना, चुपचाप बाकी की सामग्री प्लेट में लेकर, वाचा ने प्राप्त खाना मज़े से खाया!

जीवंत उदाहरण

"आर्थर आशे" विश्व प्रसिद्ध विम्बल्डन प्लेयर थे। जब उन्हें एक गंभीर बीमारी हुई तब दुनियाभर से उनके शुभचिंतकों ने उन्हें कई पत्र भेजे।

एक शुभचिंतक ने अपने पत्र में लिखा, "ऐसा तुम्हारे साथ ही क्यों हुआ? भगवान ने ऐसी गंभीर बीमारी के लिए तुम्हें ही क्यों चुना?"

उस पत्र का जवाब देते हुए आशे ने लिखा, दुनियाभर में ५ करोड़ बच्चे टेनिस खेलना शुरू करते हैं। उसमें से ५० लाख टेनिस खेलना सीखते हैं। उसमें से ५ लाख प्रफेशनल टेनिस खेलना सीखते हैं। उसमें से ५०,००० प्रफेशनल कॉम्पीटिशन में सिलेक्ट होते हैं। उसमें से ५००० ग्रैन्ड स्लैम तक पहुँचते हैं। उसमें से ५० विम्बल्डन तक पहुँचते हैं। उसमें से चार सेमिफाइनल तक पहुँचते हैं। उसमें से दो फाइनल तक पहुँचते हैं, और उसमें से एक चैम्पियनशिप जीतता है।

जब मैंने अपनी चैम्पियनशिप की ट्रोफि उठाई थी, तब मैंने भगवान से यह नहीं पूछा कि, "वाइ मी? ५ करोड़ की संख्या में से इसके लिए तुमने मुझे ही क्यों पसंद किया?" तो फिर, आज मैं पीड़ा में हूँ तब मैं भगवान से ऐसा कैसे पूछ सकता हूँ कि, "वाइ मी? इसके लिए मैं ही क्यों!"

बालमित्रों, आर्थर आशे की कितनी ऊँची समझ कही जाएगी! बिल्कुल भी क्लेश किए बिना खुद के इनाम और दंड को उन्होंने शांति से स्वीकार किया।

पेपर कप बेल-एक्टिविटी

आवश्यक सामग्री : पेपर कप, पाइप क्लिनर, बड़े थी बीड्स, गोल बेल या जिंगल बेल (घंटी), गिफ्ट रिबन, पोस्टर पेन्टिंग कलर या अक्रिलिक कलर, पेन्टिंग ब्रश, ग्लिटर, सिज़र।

पेपर कप के नीचे के भाग में पेन्सिल से एक छोटा छेद करो।

पेपर कप को पोस्टर कलर से पेन्ट करो और यदि पेपर कप ग्लॉसी या वैक्स के हों तो अक्रिलिक कलर करें।

कलर जब गीला हो तभी उस पर ग्लिटर छिड़के अर्थात् सूखने पर उस पर ग्लिटरवाला ग्लू भी लगा सकते हैं।

पाइप क्लिनर के एक छोर पर एक छोटा लूप करके पेन्ड्युलम जैसा बनाओ और इस लूप पर तीन इंच लंबी रस्सी बाँधो।

रस्सी के आखिरी छोर पर एक छोटा बेल लगाइए। अगर आप बजा सके ऐसी बेल बनानी हो तो यह तैयार हुए क्राफ्ट आइटम का उपयोग करके फोटो में दी गई बेल से बड़ी साइज़ की बेल बना सकते हैं।

पाइप क्लिनर का दूसरा छोर पेपर कप के नीचे के भाग में किए गए छोर से निकालिए और पूरा पाइप क्लिनर बाहर आ जाए इस तरह से खींचो।

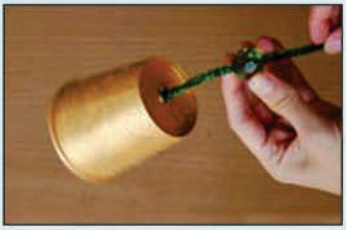

अब पाइप क्लिनर में से एक बीड निकालिए।

पाइप क्लिनर का लूप बनाओ और बीड के ऊपरी भाग को छूए इस तरह बाँध दो।

साटन रिबन काटकर बीड के ऊपरी भाग में बो बनाकर बाँध दो।

इस बेल को क्रिसमस ट्री के सजावट के रूप में लगा सकते हैं या तो क्रिसमस के किसी भी पर्फोर्मेन्स या क्लास एक्टिविटी में म्यूज़िकल साधन की तरह उपयोग कर सकते हैं।

मीठी यादें

एक बार अमरीका ले जाने के लिए वी.सी.डी. का शिपमेन्ट तैयार करना था। पूरा शिपमेन्ट तैयार करने के लिए बीस-पच्चीस दिन का समय था। ऑर्डर इतना बड़ा था कि, वी.सी.डी. बनाने के लिए चौबीस घंटे मशीन चालू रखें तब मुश्किल से काम पूरा हो। इस ऑर्डर को बनाने की ज़िम्मेदारी दो बहनों पर थी। उन दोनों बहनों ने शिफ्ट में काम करने का तय किया। काम इतना ज्यादा था कि, दोनों को दोपहर और रात को मुश्किल से दो-दो घंटे आराम मिलता। एक-दूसरे की अनुपस्थिति में दोनों एक-दूसरे का काम संभाल लेती थीं।

इस बात को दो-तीन दिन बीते होंगे। एक आप्तपुत्र ने नीरू माँ को इस बात की जानकारी दी कि, बहनें इस तरह से जागकर काम पूरा कर रही हैं। तुरंत ही नीरू माँ ने बहनों को फोन किया और पूछताछ की। हेल्प में कितने लोग है, बहनें कैसे काम कर रही है, वगैरह, सभी जानकारी ली।

फिर नीरू माँ ने प्रेम से बहनों से कहा, "मैंने तुम्हारे लिए स्पेश्यली गांठिया, चिवड़ा, चकरी आदि दो-तीन नाश्ते बनवाए हैं। तुम्हें और क्या खाना है? और क्या बनवाऊँ तुम्हारे लिए?"

बहनों को तो इतना नाश्ता पर्याप्त था, लेकिन फिर भी नीरू माँ बहनों के लिए रोज़ नई-नई आईटम भेजतें। कभी पानी-पूरी तो कभी पापडी का लोट (गुजराती एक व्यंजन)। वात्सल्य (नीरू माँ का निवास स्थान) में जो बनता, वह बहनों के लिए भेज देते। रोज़ खाना खाने के बाद नीरू माँ खास वी.सी.डी. डिपार्टमेन्ट की बहनों को याद करके उनके लिए खाना भेजते।

इस तरह नीरू माँ की संभाल और देखभाल से सभी का काम करने का उत्साह कई गुना बढ़ जाता और खुशी-खुशी रातें जागकर भी दादा का काम करते।

और अंत में...

ब्रिटेन (देश) के बच्चे उन्हें "फादर-क्रिसमस" कहकर संबोधित करते थे। जर्मनी में वे "क्रिस क्रिंगल" हैं। और हाँ, आप उन्हें "सैन्टक्लॉज" के नाम से पहचानते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हजारों साल पहले सैन्टक्लॉज को लोग "सेइन्ट निकोलस" के नाम से संबोधित करते थे?

हजारों साल पहले, निकोलस समुद्र तट पर बसे हुए मायरा नामक गाँव में रहते थे, जो अब तुर्की नाम से पहचाना जाता है। बचपन से ही उन्हें इश्वर के लिए सब से ज्यादा प्रेम था। वे बहुत मेहनत से पढ़ाई करते, प्रार्थनाएँ करते, गरीब बच्चों की मदद करते और इश्वर की भक्ति करते थे।

मायरा में एक बहुत गरीब इंसान रहता था। उसकी पत्नी नहीं थी लेकिन बड़ी उम्र की तीन बेटियाँ थीं। लेकिन वह इंसान इतना गरीब था कि उसके पास अपनी बेटियों की शादी करने के लिए भी पैसे नहीं थे। निकोलस उसकी इस हालत को जानते थे। देर रात, निकोलस ने उस इंसान के घर की खिड़की से कुछ डाला, वह सोने से भरी हुई थैली थी जो कि उस इंसान की बड़ी बेटी की शादी के लिए काफी थी।

वह इंसान और उसकी बेटियाँ खुश हो गए। बड़ी बेटी की शादी सुखरूप संपन्न हो गई। लेकिन उस पिता पर अभी भी अन्य दो बेटियों की शादी की ज़िम्मेदारी थी।

एक रात, निकोलस वापस आए और सोने से भरी हुई एक थैली फिर से डाल गए।

इसे पाकर पिता खुश तो हो गए लेकिन साथ ही सोचने लगे कि उन्हें मदद कौन कर रहा है? और क्यों?

निकोलस नहीं चाहता था कि उस इंसान को ये सब पता चले। वह ऐसा मानता था कि किसी भी प्रकार की प्रशंसा या अपेक्षा के बगैर गुप्त तरीके से किसी की मदद करना ही उत्तम कहलाता है।

Akram Express
December 2015
Year : 3, Issue : 9
Conti. Issue No.: 33

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

लेकिन उस इंसान को जानना ही था कि उसकी मदद कौन कर रहा है। उसकी एक बेटी की शादी बाकी थी और उसे उम्मीद नहीं थी कि उसे फिर से मदद मिलेगी ही। और उसे मदद करनेवाले के बारे में जानना भी था इसीलिए उसने खिड़की बंद कर दी और दरवाज़े की ओर देखने लगा। निकोलस मदद करना चाहते थे लेकिन पता नहीं लगने देना था। इसीलिए उसने तीसरी बेटी की शादी के लिए सोने से भरी हुई थैली घर के पिछवाड़े से चिमनी(धूंआ निकलने का मार्ग) में डाल दी।

इस प्रकार सेइन्ट निकोलस ने पूरी ज़िंदगी किसी भी उम्मीद के बगैर गरीब लोगों की मदद की। उनके इस गुण के कारण वे विश्वभर में प्रसिद्ध हो गए।

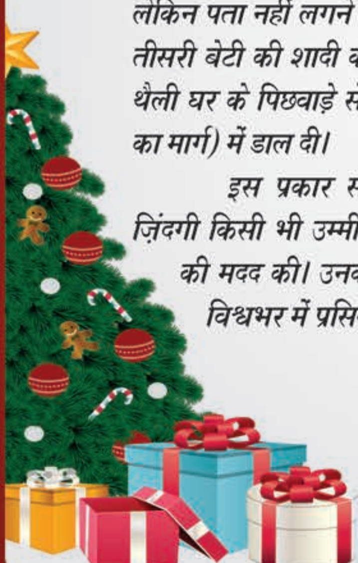

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published